आचार्य अजितसेनकृत-अलङ्कारचिन्तामणि का आलोचनात्मक अध्ययन

इलाहाबाद विश्वविद्यालय की डी० फिल० उपाधि हेतु
प्रस्तुत शोधप्रबन्ध

प्रस्तुतकर्त्री

कु० अर्चना पाण्डेय
एम० ए० (सस्कृत-साहित्य)

निर्देशक

डॉ० चन्द्र भूषण मिश्र
प्रोफेसर (सस्कृत-विभाग)
इलाहाबाद विश्वविद्यालय

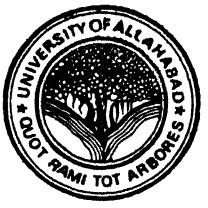

संस्कृत विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
१९९८

	अनुक्रमणिका	पृष्ठ सख्या
अध्याय - 1	कवि का ऐतिहासिक परिचय, ग्रन्थकार का समय, स्थान, वश व्यक्तित्व एव कृतित्व	1 - 24
अध्याय - 2	कवि शिक्षा निरूपण	25 - 84
अध्याय - 3	चित्रालङ्कार निरूपण	85 - 100
अध्याय - 4	शब्दालङ्कारों का विवेचन	101 -117
अध्याय - 5	अलङ्कारों का वर्गीकरण तथा अर्थालङ्कारों का समीक्षात्मक विवेचन	118 - 220
अध्याय - 6	काव्य रस, दोष तथा गुणादि निरूपण	221 - 252
अध्याय - 7	नायक नायिकादि विमर्श	253 - 263
उपसहार -		264 - 265

भूमिका

अलकार शास्त्र का प्रारम्भ कब से हुआ यह निश्चित रूप से नही कहा जा सकता, तथापि जूनागढ (।50 ईस्वी) मे उपलब्ध रुद्रदामन नामक शिलालेख से यह स्पष्ट है कि द्वितीय शताब्दी अथवा इसके पूर्व गद्य और पद्य रूप मे सस्कृत वाड् मय का उदय हो चुका था और उस समय मे काव्य रचनाएँ अलकृत और गुणों से युक्त होती थी क्योंकि रुद्रदामन के शिलालेख मे स्फुट, मधुर कान्त, उदार गुणों का उल्लेख है जो काव्यादर्श के प्रसाद, माधुर्य कान्ति एव उदारता गुणो से तुलनीय है ।[1] इसके अतिरिक्त राजशेखर की काव्य मीमासा के एक उद्धरण से यह अवगत होता है कि सर्वप्रथम ब्रह्मा ने शिव को अलकार शास्त्र का ज्ञान कराया था, तत्पश्चात् शिव ने दूसरों को इसकी शिक्षा दी । पुन किस प्रकार से ।8 (अठारह) अधिकरणोंमे इसे विभाजित किया गया तथा प्रत्येक अधिकरण की शिक्षा किन-किन आचार्यो ने दी इसका उल्लेख काव्य मीमासा मे अविकल रूप से किया गया है ।[2] इन आचार्यों मे कतिपय आचार्य वात्स्यायन के कामशास्त्र मे भी वर्णित है । सुवर्णनाम और कुचुमार कामशास्त्र मे उपजीव्य आचार्यों के रूप मे उल्लिखित किए गये है[3]।

। सर्वक्षत्राविस्कृतवीरशब्द जातोत्सेकाविधेयाना यौधेयाना प्रसह्योत्सा दकेन शब्दार्थगान्धर्वन्यायाद्याना विद्याना महतीना महाक्षत्रपेण रुद्रदाम्ना (। पृ0 44) । काव्यशास्त्र का इतिहास. पी0वी0 काणे, पृ0 416

2 का0मी0 , प्रथम अध्याय, पृ0 ।

3 का0 सू0, ।/।/।3-।6

इसके अतिरिक्त ऋग्वेद मे भी ऐसे अनेक स्थल प्राप्त होते है जहाँ अलकार के लिए 'अलकृत' या 'अलकृति' पदो क्के का उल्लेख प्राप्त होता है ।[1]

शतपथ ब्राह्मण मे स्पष्ट रूप से 'अलकार' पद का उल्लेख प्राप्त होता है ।[2]

वेदो मे अलकार तत्व :-

आलकारिक तत्वों की उपलब्धि वैदिक ऋचाओं मे दर्शनीय है । उषा विषयक ऋचा मे चार उपमाएँ एक साथ दी गयी है ।[3]

निरूक्त मे उपमा - निरूक्तकार यास्क ने पाच प्रकार की उपमाओ का उल्लेख किया है । उपमा द्योतक निपात् इव, यथा, चित्, न, उ और आ है । इन वाचक पदों के प्रयोग मे यास्क के अनुसार कर्मोपमा होती है ।[4]

---

1 (क) वायवायाहि दर्शतेमेसोमा अरकृता । ऋग्वेद ।,2,।

(ख) अस्यरकृति सूक्ते । वही, 7, 29, 3

(ग) तवमग्ने द्रविणोदा अरकृते । वही, 2, ।, 7

2 आ जनाम्य जनेप्रयच्छन्त्येषा हमानुषो लकारस्तेनैव त मृत्युमन्तर्दधते शतपथब्रा0 का0, ।3/8/7, पृ0 ।792

3 ऋग्वेद, ।/।24/6

4 (क) निरूक्त 3/।5

(ख) वही 3/।3

गार्ग्य निरूक्तकार यास्क से भी प्राचीन माने जाते है । इनके अनुसार उपमा वहाँ होती है जहाँ एक वस्तु दूसरी वस्तु से भिन्न होते हुए भी उसी के सदृश हो ।[1]

साख्यसूत्र मे तो उपमाओं का प्रयोग आख्यायिकों के सन्दर्भ मे बहुलता से हुआ है ।[2]

पाणिनि और उपमा - पाणिनि की अष्टाध्यायी मे उपमा, उपमान, उपमिति तथा समान्य शब्दों का प्रयोग भी है जो अलकारशास्त्र के पारिभाषिक शब्द है ।[3]

उपर्युक्त उद्धरणों से विदित होता है कि अलकार, रस, गुण आदि सम्पूर्ण काव्य तत्वों की उपलब्धि वाड्.मय मे होती रही किन्तु इस प्रकार का कोई स्वतन्त्र ग्रन्थ उपलब्ध नही होता था जिसमे इन तत्वों का निरूपण हुआ हो, अत इस परिस्थिति मे भरत मुनि का नाट्यशास्त्र ही आदि उपलब्ध प्रथम ग्रन्थ है और उन्हे ही काव्य शास्त्र के आद्य आचार्य के रूप मे स्वीकार करना समीचीन प्रतीत होता है । आचार्य भरत के पश्चात् भामह, दण्डी, उद्भट, वामन, रुद्रट, आनन्द वर्धन कुन्तक, क्षेमेन्द्र, भोज, मम्मट, रूय्यक शोभाकर मिश्र, वाग्भट, जयदेव, विद्यानाथ, विश्वनाथ, अप्पयदीक्षित, पण्डित राज जगन्नाथ तथा विश्वेश्वर पर्वतीय तक अर्थात् ईसा पूर्व 200 से 18 वी शती तक अविकल रूप से काव्य शास्त्रीय लक्षण ग्रन्थों का निर्माण होता रहा । ऐसे ही आचार्यो मे आचार्य अजितसेन अनन्यतम आचार्य थे जिन्होंने अलकार चिन्तामणि में काव्यशास्त्रीय सम्पूर्ण तत्वो का सोदाहरण निरूपण किया सर्वाड्.गीण काव्यशास्त्रीय विषयों का प्रतिपादन होने के कारण इस पर अनुसन्धान करने की मेरी अभिरूचि उत्पन्न हुई । अत मैने शोध प्रबन्ध को 8 अध्यायो मे विभक्त कर अनुसन्धान कार्य को प्रारम्भ किया । प्रथम अध्याय मे कवि का ऐतिहासिक परिचय, द्वितीय मे कवि शिक्षा निरूपण, तृतीय मे चित्रालकार, चतुर्थ मे शब्दालकार, पचम मे अलकारों का वर्गीकरण तथा उनकी समीक्षा की गयी है ।

---

1. निरू0 3/13

अध्याय छ मे रस, दोष तथा गुण का निरूपण किया गया है । सातवे अध्याय मे नायकादि के स्वरूप का विवेचन किया गया है आठवा अध्याय उपसहार के रूप मे है ।

ग्रन्थ के अनुशीलन से ज्ञात होता है कि इनके ग्रन्थ पर आचार्य भामह, दण्डी, भोज, मम्मट तथा वाग्भट का प्रभाव हैं । कतिपय दोषों पर भामह का स्पष्ट प्रभाव है । उपमा निरूपण के सन्दर्भ मे दण्डी द्वारा निरूपित उपमा भेदों का अजितसेन ने क्रम से निरूपण किया है । दोष निरूपण के प्रसंग मे मम्मट का स्पष्ट प्रभाव है । परवर्ती काल मे आचार्य विद्यानाथ अजितसेन से अधिक प्रभावित दिखाई देते है । अनुसन्धान करते समय अनुसन्धात्री की मौलिक प्रवृत्ति का प्राधान्य रहे - ऐसा ध्यान दिया गया है ।

अनुसन्धान क्षेत्र मे जिन गुरूजनों ने अपना योगदान दिया । उनके प्रति आभार प्रकट करना मैं अपना कर्तव्य समझती हूं । सर्वप्रथम मै अपने पिता **श्री शिवश्याम पाण्डेय** (प्रधानाचार्य, ऋषिकुल उच्चतर माध्यमिक विद्यालय इलाहाबाद) एव माता **श्रीमती रन्नो देवीं पाण्डेय** (अध्यापिका, विद्यावती दरबारी बालिका इण्टर कालेज) के प्रति आजीवन ऋणी हूँ, जिनके अपार स्नेहिल प्रेम के फलस्वरूप ही यह अनुसन्धान कार्य सम्पन्न हो सका ।

शोधकार्य मे प्रवृत्त होने पर मै अपने श्रद्धेय गुरू **डा0 चन्द्रभूषण मिश्र** (प्रोफेसर इलाहाबाद विश्वविद्यालय) के प्रति श्रद्धावनत हूँ, जिनसे मुझे समय-समय पर अपेक्षित सहायता एव प्रेरणा मिली ।

इसके अतिरिक्त अपने गुरूजन **डा0 राजेन्द्र मिश्र** (प्रो0 एव अध्यक्ष-शिमला विश्वविद्यालय) **डा0 हरिशंकर त्रिपाठी, डॉ0 रामकिशोर शास्त्री, डॉ0 कौशल किशोर श्रीवास्तव, डा0 शकरदयाल द्विवेदी, डा0 राजलक्ष्मी वर्मा, डॉ0 मृदुला त्रिपाठी, डॉ0 ज्ञानदेवी श्रीवास्तव** (प्रो0 एव अध्यक्ष) डॉ0 सुरेशचन्द्र पाण्डेय (भू0पू0 प्रो0 एव अध्यक्ष) डॉ0 सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव (भू0पू0 प्रो0 एव अध्यक्ष) डा0 नसरीन, डाॅ मजुला वर्मा, डॉ0 हरिदत्त शर्मा, डॉ0 वीरेन्द्र कुमार सिह (सभी इलाहाबाद विश्वविद्यालय) के सुझाव, निर्दशन और सहायता के लिए उनके प्रति मै श्रद्धावनत तथा कृतज्ञ हूँ ।

डॉ बलभद्र त्रिपाठी (निदेशक-सस्कृत शोध सस्थान फैजाबाद) के प्रति आभार प्रकट करना मै अपना कर्तव्य समझती हूँ जो अनुसन्धात्री को सदा प्रोत्साहन एव सत्प्रेरणाएँ देते रहे । कविराज डॉ0 जनार्दन प्रसाद पाण्डेय (साहित्य-विभागाध्यक्ष-बी0एन0 मेहता सस्कृत महाविद्यालय प्रतापगढ) से विषय की विलष्टता को दूर करने एव शोधप्रबन्ध की सम्पन्नता मे जो सहायता मिली वह अविस्मरणीय है ।

डॉ0 सोम प्रकाश पाण्डेय (रीडर-मुनीश्वरदत्त स्नातकोत्तर महाविद्यालय प्रतापगढ) के प्रति भी मै अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ जिनसे मुझे प्रोत्साहन एव अपेक्षित सहयोग मिलता रहा ।

प्रत्यक्ष एव परोक्ष रूप से शोध प्रबन्ध प्रस्तुत करने मे जिन विद्वानों एव सहृदय काव्यमर्मज्ञों का सहयोग रहा उनके प्रति भी मै अपना आभार प्रदर्शित करती हूँ ।

अध्याय - ।

कवि का ऐतिहासिक परिचय

ग्रन्थकार का समय, स्थान, वंश व्यक्तित्व एव कृतित्व

भारतीय सस्कृत वाङ्मय के अनेक लेखक जिसमे विशेष रूप से प्रारम्भिक काल के लेखक इतने नि स्पृह एव गर्व शून्य रहे है कि उच्चकोटि के ग्रन्थ निर्माण करने पर भी अपने जीवन वृत्त के विषय मे कहीं भी कुछ नहीं लिखा । अपनी प्रसिद्धि के विषय मे तो उन्होंने कभी सोचा ही नहीं । इसी कारण अनेक सस्कृत लेखकों का साहित्य मे स्थान निर्धारण करने के लिए इतिहासकारों को निश्चित प्रमाणों के अभाव मे विविध उपायों का आश्रय लेना पडता है । इन उपायों को स्थूल रूप से दो भागों मे विभाजित किया जा सकता है ।

(।) किसी एक कवि के समग्र ग्रन्थों मे उपलब्ध परिस्थितियों एव लेखों का आधार । जिसे अन्तर्साक्ष्यों का भी आधार कहा जा सकता है ।

(2) दूसरे अनेक ग्रन्थों के उल्लेखों, शिलालेखों एव उद्धरणों का आधार जिसे वाह्य साक्ष्यों का आधार कहा जा सकता है ।

किसी कवि या ग्रन्थकार के जीवन-काल को निर्धारित करने के लिए दोनों ही प्रकार के उपायों का आश्रय लिया जा सकता है । कोई भी कवि या ग्रन्थकार अपने समय की सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, साहित्यिक तथा अन्य परिस्थितियों से पृथक् नही रह सकता । यदि कोई कवि न चाहे तो समाज, राजनीति, धर्म, साहित्य आदि तत्त्व उसके ग्रन्थों मे अदृश्य रूप से समाहित हो जाते है । और जो कवि अपने चारों ओर के वातावरण पर अपनी दृष्टि अच्छी तरह डालकर ही अपने ग्रन्थों

की रचना करे उसके विषय मे कहना कि क्या । इसीलिए किसी विशेष लेखक या कवि के ग्रन्थों मे तत्कालीन परिस्थितियों एव उल्लेखों का अनुसन्धान उस लेखक के समय निर्धारण करने मे विशेष सहायक होता है ।

सस्कृत के महान साहित्यकार आचार्य अजित सेन का समय निश्चित रूप से ज्ञात नहीं है तथापि इतिहासकारों तथा अन्य तर्को के माध्यम से इस सन्दर्भ मे विचार किया जा रहा है ।

आचार्य अजित सेन ने काव्य स्वरूप के निर्धारण मे आचार्य वामन द्वारा स्वीकृत रीति तथा आनन्द वर्धन द्वारा निरूपित व्यग्यार्थ का भी उल्लेख किया है ।[1]

आचार्य वामन जयापीड के सचिव थे । इनका समय 750 ई0 से 850 ई0 स्वीकार किया गया है ।[2]

आचार्य आनन्द वर्धन कशमीर नरेश अवन्तिवर्मा के सम-सामयिक थे ।[3] अवन्ति वर्मा का समय 855 ई0 से 884 ई0 तक माना जाता है अत आनन्द वर्धन का समय नवम् शताब्दी का मध्य अथवा उत्तरार्द्ध स्वीकार किया जाता है ।[4]

---

1 शब्दार्थालकृतीद्ध नवरसकलित रीतिभावाभिरामम् ।
व्यग्यार्थं विदोष गुणगणकलित नेतृसद्वर्णनाढयम् ।। अ0चि0 1/7 पूर्वार्द्ध

2 अलकारशास्त्र परम्परा पृ0 - 41

3 (क) मुक्ताकण शिवस्वामी कविरानन्दवर्धन ।
प्रथमरत्नाकरश्चागात् साम्राज्येऽवन्तिवर्मण ।। राजतरगिणी 2/4

4 अलकारशास्त्र परम्परा पृ0 - 65